Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 3, May-2018, ISSN 2230-7540

केदारनाथ सिंह प्रेम के अनुभव विलक्षण

Dr. Sheena Prabhakaran*

Assistant Professor, Department of Hindi, St. Josephs College, Devagiri-(Autonomous), Kozhikode, Kerala

सार - ***केदारनाथ सिंह प्रेम के माध्यम से मानवीय संबंधें को जोड़ते हैं। उन्होंने प्रकृति-चित्राण की भाँति प्रेम को भी काव्यात्मक रूप दिया है। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी लिखते हैं कि ''इन गीतों की जमीन तो वही है अर्थात् प्यार और प्रकृति पर कवि ने इस जमीन को एक नयी ओर निजी आभा प्रदान की है। वह प्यार और प्रकृति के उन अछूते रूपों का स्पर्श करता है जिन पर अन्य कवियों की द्रष्टि नहीं गयी थी। कवि का प्रेम अनुभव विलक्षण है। उसे चिंता इस बात की है कि समकालीन हिंदी कविता में प्रेम की उपस्थिति अल्पमात्रा में है।***

----------X----------

कवि केदारनाथ सिंह की प्रेम से संबंध्ति कविताओं में उदास एवं गंभीर दोनों ही लय विद्यमान हैं। उनकी कविताओं में प्रेम की अनुभूति बड़े सूक्ष्म स्तर पर व्यंजित होती है। जिसे 'स्वरमयी' नामक कविता में देखा जा सकता है। प्रेम के मन पर प्रेमिका के सौन्दर्य की अमिट छाप पड़ी हुई है। वह प्रेम में पूरी तरह डूब चुका है और उसका प्रेम उसके अशांत मन को शांति प्रदान करता है-

''लम्बे दिन के बाद शाम को भटका-भटका

कभी पहुँच जब जाता हूँ उस जगह, जहाँ पर

तुम ने बात कही थी वह, चुप बह जाता है

मन का सारा दर्द स्वरों में। जब था खटका

तब था, अब तो लिखी हुई हो तुम्हीं वहाँ पर।''

जिंदगी के उदास क्षणों में कवि प्रेम के संवेग द्वारा अपनी रक्षा करता है। प्रेमिका के नाम को वह बार-बार पढ़ना चाहता है, जिसे जिंदगी के मनहूस पन्नों के मध्य मोरपंखी की तरह छुपा रखा है। यही क्षण कवि को प्रेम के लिए प्रेरित करता है जिससे वह अपने उदास ओर नीरस जीवन में नयापन ला सके। इस भावना को 'नये दिन के साथ' नामक कविता में देखा जा सकता है-

''नये दिन के साथ

एक पन्ना खुला गया कोरा

हमारे प्यार का

सुबह,

इस पर कहीं अपना नाम तो लिख दो

बहुत से मनहूस पन्नों में

इसे भी कहीं रख दूँगा।

और जब-जब

उड़ा जायेगी अचानक बन्द पन्नों को

कहीं भीतर

मोरपंखी की तरह रक्खे हुए उस नाम को

हर बार पढ़ लूँगा।'

कवि चाहता है कि उसकी प्रेमिका रूके और वह उसके आँचल में बहते हुए समीरन को बाँ दे। प्रिया के जाने का दुख कवि के प्रन को तोड़ दिया है। वह चाहता है कि उसके खुले हुए जूड़े में वसंत के आगमन का पहला बोर बाँ दें। जिससे प्रिया पिफर वापस आ जाए वसंत ट्टतु के साथ। कवि 'विदा-गीत नामक कविता में इसी बात की ओर इशारा करता है-

''रूको, आँचल में तुम्हारे

यह समीरन बाँध् दूँ, यह टूटता प्रन बाँध् दूँ।

एक जो इन उफँगलियों में

कहीं उलझा रह गया है

www.ignited.in

पफूल-सा वह काँपता क्षण बाँध् दूँ!

पर सुनो तो-

खुले जूड़े में तुम्हारे

बीर पहला बाँध् दूँ!

हाँ, यह निमन्त्राण बाँध् दूँ!''

प्रेम अजर है और अमर भी है। वह कभी नष्ट नहीं हो सकता। कवि को इस बात का अटल विश्वास है। इसलिए उनकी कविता का यह सबसे बड़ा यथार्थ हे। कवि 'घोषणा' नामक कविता में प्रेम के प्रति अपनी आस्था के यथार्थ को इस प्रकार प्रस्तुत करता है-

''मैं घोषित करता हूँ

कि इस अघोष युद्ध में

जहाँ बहुत कुछ नष्ट हो चुका है

वहाँ अब भी.....अब भी

प्यार है।

कवि केदारनाथ सिंह की कविता जाना में प्रेम के उत्कृट रूप की अभिव्यक्ति हुई है। प्रेम में त्याग और धैर्य उसकी मार्मिकता को बढ़ाता है। इसलिए कवि पूरे धैर्य एवं संयम के साथ लिखता है-

''मैं जा रही हूँ उसने कहा

जाओ-मैंने उत्तर दिया

यह जानते हुए कि जाना

हिन्दी की सबसे खौपफनाक क्रिया है।''

आदिम युग से कविगण प्रेम का बड़ो रोमानी अंदाज में प्रस्तुत करते चले आ रहे है, परन्तु कवि केदारनाथ सिंह व्यक्तिगत प्रेम को समिष्टगन बना देना चाहते है। समाज के प्रति उनकी चिंता उस समय भी जागृत रहती है, जब प्रेमिका का हाथ उसके हाथ में होता है। "हाथ नामक कविता में कवि इसी भाव को अभिव्यक्ति करता है-

''उसका हाथ

अपने हाथ में लेते हुए मैंने सोचा

दुनिया को

हाथ की तरह गर्म और सुन्दर होना चाहिए।

उनकी आरंभिक दौर की प्रेम कविताओं में रूमानी भाव की प्रवृत्ति अध्कि थी, परन्तु धीरे-धीरे उनकी प्रेमपरक कविताओं में यथाथंवादी रूआन दिखायी देता है। कवि की प्रेम भावना निजी संवेदना का अतिक्रमण करती है और कवि को उसमें एक उदात्त भावना दिखायी देती है। इस दृष्टि से 'वह नामक कविता दृष्टव्य है-

''इतने दिनों बाद

वह इस समय ठीक

मेरे सामने है

न कुछ कहना

न सुनना

न पाना

न खोना

सिपर्फ आँखें के आगे

एक परिचित चेहरे का होना

होना

इतना ही कापफी है

बस इतने से

हल हो जाते हैं

बहुत-से सवाल

बहुत-से शब्दों में

बन इसी से मर आया है लतातव अर्थ

कि वह है।''

प्रेमिका की उपस्थिति मात्रा से प्रेमी को कर्म और लक्ष्य के प्रति न्यौछावर होने की दृढ़ता का एहसास होता है। प्रेमी-प्रेमिका के चेहरे मात्रा की उपस्थिति में मन में आवे अनेक प्रश्नों का समाधन ढूँढ लेता है- "यहाँ आकर निजी प्रेम, मानवीय प्रेम से भी जुड़ जाता है। प्रेम का प्रणय पक्ष ओझल नहीं होता बल्कि वह जीवन के आधर के रूप में अपनी भूमिका अख्तियार करना है।

www.ignited.in

जीवन की आवधराओं के बीच प्रेमिका की स्नेहित याद, कवि की स्मृतियों को दुनिया में ले जाती है। कवि प्रेम के प्रति स्वयं की निष्ठ को इस प्रकार अभिव्यक्ति करता है-

"वह है

है

और चकित हूँ मैं

कि इतने बरस बाद

और इस कठिन समय में भी

वह बिल्कुल उसी तरह

हँस रही है

और बस

इतना ही कापफी है।"

कवि ने प्यार को 'बाघ' के रूप में देखने का प्रयत्न किया है। पे्रम करना सरल नहीं होता। प्रेम होने या न होने के बीच असंख्य कठिनाइयाँ आती हैं जो व्यक्ति के स्वाभिमान के टकराती है। कवि प्रेम की इसी विकट स्थिति का चित्राण इन शब्दों में करता है-

"उसका ख्याल था

कि यह जो प्यार है

यह जो हम करते हैं एक-दूसरे से

या पिफर नहीं करते

यह भी एक बाघ है

और इतना करीब

कि ध्यान से सुनो

तो तुम अपनी छाती में सुन सके हो

उसके भारी पंजों के चलने की आवाज।"

बच्चन सिंह इस कविता पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं कि "प्यार की इतनी नई, ताजा और अनाघ्रत परिभाषा कहीं नहीं मिलेगी। यह परिभाषा एक और प्रश्न छोड़ देती है कि प्यार करना बड़ज़ बाघ है या न करना। यह प्रश्न कविता के पास से ध्वनित है। सम्भवतः इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि 'प्यार न करना बड़ा बाघ है। स्त्री की कोमलता से जुड़कर बाघ और भी भयानक लगने लगता हैं पिफर संगीत की एक शोकधुन उसके भारी पंजों के चलने की आवाज। घुमक्कड़ और जादुई बाघ के रहने की एक जगह यह भी है।"

कवि परिवार के प्रत्येक सदस्य के महत्व को वर्णित करता है। स्त्री ही घर को स्वर्ग बनाती है, परंतु जिस घर में स्त्री न हो वह घर वीरान हो जाता है। कवि का व्यक्तिगत जीवन भी इसी वीराने का शिकार बना। उनका विवाद दो बार हुआ। दोनों पत्नियों की अकाल मृत्यु से उनका जीवन दुखी होता गया। लेकिन पत्नी की याद उन्हें बराबर आती रही। इसलिए पत्नी को याद करते हुए 'पत्नी की अट्ठाइसवीं पुण्यतिथि पर नामक कविता लिखी है। कविता क्या है? इसे पत्नी को अर्पित श्रन्धांजलि कर सकते हैं। पत्नी के प्रति प्रेम ने कविता का रूप धरण कर लिया। पत्नी का साथ न रहना सब कुछ होने के बाद भी खाली-खाली प्रतीत होता है जिसे अभिव्यक्त करते हुए कवि कहता है-

"पहले वह गई

पिफर बारी-बारी चले गए

बहुत से दिन

ओर ढेर सारे पक्षी

और जाने कितनी भाषाएँ

कितने जलस्रोत चले गए दुनिया से

जब वह गई

और एक दिन देखता हूँ

कि नाम पुकारते हुए

सामने से आ रहे हैं

मंच और माइक

पुष्प-गुच्छ और पुरस्कार

और जब अलंकृत होकर

उतर रहा था नीचे

तो लगा

www.ignited.in

कोई कान में बुदबुदा रहा है-

कवि जी,

यह कैसा मंच है

शब्दों का यह कैसा उत्सव

जहाँ प्यार की एक ही तुक है

पुरस्कार

इस प्रकार हम देखते हैं कि केदारनाथ सिंह को प्रेमानुभूति का गहरा एहसास था। वह अपनी कविताओं में प्रेम की महत्ता को उजागर करते है और प्रेम में आ रही अड़चनों को दूर करने का प्रयत्न भी करते हैं। उनका प्रेम-चित्राण सर्वकालिक एवं सर्वव्यापी है।

सन्दर्भ

1. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद: समकालीन हिन्दी कविता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पुनर्मुद्रित संस्करण-2014, पृ. 212
2. अत्रोयः तीसरा सप्तक, भारतीय ज्ञानपीट प्रकाशन, नयी दिल्ली, दसवाँ संस्करण-2013, पृ. 130
3. सिंह, केदारनाथः अभी, बिल्कुल अभी, संभावना प्रकाशन, हापुड, दूसरा संस्करण-1980, पृ. 93
4. अज्ञेय: तीसरा सप्तक, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक, नयी दिल्ली, दसवाँ संस्करण-2013, पृ. 141-142
5. सिंह, केदारनाथः यहाँ से देखो, राधकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पाँचवी आवृत्ति, 2013, पृ. 88
6. सिंह, केदारनाथ: जमीन पक रहो है, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, पंचम संस्करण-2012, पृ. 80
7. वही, पृ. 79
8. सिंह, केदारनाथ: अकाल में सारस राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा संस्करण-2015, पृ. 57
9. सहाय, निरंजन: केदारनाथ सिंह और उनका समय, शिन्याचन पब्लिशर्न एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स, दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2018, पृ. 155
10. सिंह, केदारनाथ: अकाल में सारस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, छटा संस्करण-2015, पृ. 57-58
11. सिंह, केदारनाथ: बाघ, वाणी पकाशन, नीय दिल्ली प्रथम वाणी संस्करण-2009, पृ. 26
12. त्रिपाठी, अनिल: मिट्रटी की रोशनी, शिल्यापन प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2019, पृ. 211
13. सिंह, केदारनाथ: सृष्टि पर गहरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण-2014, पृ. 73. 74

Corresponding Author

Dr. Sheena Prabhakaran*

Assistant Professor, Department of Hindi, St. Josephs College, Devagiri-(Autonomous), Kozhikode, Kerala